(1) BA Part - II MB Date - 07.04.2020

प्रश्न: चिन्तन प्रवाहमे संकलित 'चिन्ता' शीर्षक कविताक चिन्ताकेँ स्पष्ट करु।

उत्तर:- स्वनाम धन्य कवि डॉ० धीरेन्द्र नाथ मिश्र भाषा शास्त्री, कथाकार छथि। हिनकामे सामाजिक जन - जीवनक चिन्ता विशेष रुपसँ पाओल जाइछ। ग्राम - घरसँ शहर बाजारक एक सँ एक, छोट सँ छोट बातक चिन्तन मननसँ काव्य गढ़ैत छथि। कल्पनाक उड़ान कम यथार्थ विशेष लगा हिनकर रचना होइत अछि। एहि क्रममे चिन्ता शीर्षक कविता अछि।

चिन्ता चिन्ता कविक चिन्ता
घरक चिन्ता बाहरक चिन्ता
एत चिन्ता ओत चिन्ता
जतइ देखु ततइ चिन्ता।

चिन्ता सर्वव्यापी अछि। चिन्ता घरसँ बाहर धरि सर्वहारि रहल अछि। पेटक चिन्ता त' सभकेँ रहैत छैं। मुदा पेटक चिन्ता लोक केँ सेहो हायब त करैत छै। भोग आ रोगक चिन्ता सेहो सर्वव्यापी अछि।

Scanned with CamScanner

बेटा - बेटीक चिन्ता, कन्यादान आ पढ़ाइक चिन्ता सभकें होइते टा छैक। सर समाज, कर - कुटुम्बक चिन्ता सेहो सतत् लागले रहैतअछि। अवाभाव मे ही त' बैंक सं लोन लिअ त' ओकर भरबाक चिन्ता। जँ भरि मे फेल भेलहुं त' गर्त मे पहुंचा देत।

राति बितए अछि दिनक चिन्ता
दिन बितइ अछि रातिक चिन्ता।

एतावता प्राय: सभकें दिन - रातिक लागल रहैत छनि। जँ दैनिक मजदूर अछि त' ओकरा आओर चिन्ता लागल रहैत छैक।

यावत जीवन तावत चिन्ता। तें धैर्यवान लोक कें कोनो चिन्ता नहि होइत छैक। चिन्ता सं मुक्ते जीवन थीक। चिंता त' चिता समान भस्म क' दैछ।

रानी मिश्रा
मैथिली विभाग
आर० के० कॉलेज
मधुबनी - मधुबनी